E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi

आयुर्वेद का परिचय

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी,

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

प्राणिमात्र की सर्वप्रथम कामना है सुखमय दीर्घ जीवन की प्राप्ति। यद्यपि सभी शास्त्र मनुष्य को आध्यात्मिक, आधिभौतिक और आधिदैविक इन तीनों प्रकार के सन्तापों से मुक्त करने का मार्गनिर्देश करते हैं, किन्तु उनमें बतलाये गये विधानों का पालन करने के लिए उत्तम स्वास्थ्य तथा आरोग्य अत्यन्त अपेक्षित है। स्वास्थ्य-संरक्षण और रोग-मुक्ति का शास्त्र है— आयुर्वेद। इसलिए आयुर्वेद सभी शास्त्रों का आधार होने के कारण सर्वाधिक उपयोगी एवं महत्त्वपूर्ण शास्त्र है। यह सुखमय दीर्घ जीवन देने वाला शास्त्र है।

आयुर्वेद के इतिहास का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि इसके ग्रन्थों में आयुर्वेद की उत्पत्ति को ब्रह्मा द्वारा सृष्टि-उत्पत्ति के पूर्व माना गया है। ब्रह्मा द्वारा प्रणीत ब्रह्मसंहिता, जिसमें दस लाख श्लोक एवं एक हजार अध्याय थे, आज उपलब्ध नहीं है। देवलोक से मर्त्यलोक में आयुर्वेद को अवतरित करने का श्रेय महर्षि भरद्वाज को है।

आयुर्वेद अपने-आप में सर्वाङ्गपूर्ण सम्पूर्ण ईश्वरीय विज्ञान है। आयुर्वेद के प्रवर्तक धन्वन्तरि चौबीस अवतारों में एक अवतार हैं। उनके द्वारा प्रदत्त आयुर्वेद में किसी प्रकार की कमी नहीं है। इसीलिए कल्प-कल्पान्तर, युग-युगान्तर के बाद भी आयुर्वेदिक औषधियाँ लाभकारी ही होती हैं यदि उन्हें आयुर्वेदशास्त्र में निर्दिष्ट विधि के अनुसार उपयुक्त भूमि एवं उपयुक्त मुहूर्त में पूर्ण सम्मान के साथ पैदा किया जाए, मन्त्रादि के प्रयोग से उनकी रक्षा की जाए, फिर शास्त्रीय विधि से सम्मानपूर्वक पूजन करके निमन्त्रण देकर लाया जाए और शास्त्रीय विधि से सम्मानपूर्वक पूजन करके निमन्त्रण देकर लाया जाए और शास्त्रीय विधि से उनका निर्माण किया जाए, निदानपूर्वक रोग का निश्चय करके रोगी की अवस्था, शक्ति, क्षमता आदि का विचार करके प्रयोग किया जाए।

वेदों को प्राचीनतम वाङ्मय माना जाता है। ये समस्त ज्ञान के आदि स्रोत कहे जाते हैं, जिससे आयुर्वेद के आद्य स्रोत भी ये ही हैं। आयुर्वेद की विषयवस्तु चतुर्विध वेदों से प्राप्त होती है, परन्तु सर्वाधिक साम्यता अथर्ववेद से होने के कारण आचार्य सुश्रुत ने आयुर्वेद को अथर्ववेद का उपाङ्ग माना है एवं वागभट ने अथर्ववेद का उपवेद कहा है। आचार्य चरक ने भी इसकी सर्वाधिक घनिष्ठता अथर्ववेद से बतायी है और इसे पुण्यतम वेद कहा है। ऋग्वेद प्राचीनतम होने के कारण प्राचीनता की दृष्टि से चरणव्यूह में आयुर्वेद को ऋग्वेद का उपवेद कहा गया है। महाभारत (सभापर्व पर नीलकण्ठ की व्याख्या) में भी आयुर्वेद को ऋग्वेद का उपवेद कहा गया है। काश्यपसंहिता एवं ब्रह्मवैवर्तपुराण में आयुर्वेद को पञ्चम वेद कहा गया है।

जिस शास्त्रके द्वारा आयु (सुखी आयु तथा दुःखी आयु, हितकर आयु तथा अहितकर आयु) - का, हित (लाभदायक) एवं अहित (हानिकारक) आहार-विहार (स्वस्थवृत्त) - का, व्याधि (रोग) - निदान तथा शमन (चिकित्सा) का ज्ञान प्राप्त किया जाता है, उस (शास्त्र) का नाम 'आयुर्वेद' है-

आयुर्हिताहितं व्याधिर्निदानं शमनं तथा।
विद्यते यत्र विद्वद्भिः स आयुर्वेद उच्यते।।

चरकसंहिता में आयुर्वेद को इस रूप में परिभाषित किया गय है-"जिस शास्त्र में हितकर आयु तथा अहितकर आयु, सुखी आयु एवं दुःखी आयुका वर्णन हो तथा आयुके लिये हित एवं अहित आहार-विहार एवं औषधका वर्णन हो और आयुका मान बतलाया गया हो तथा आयुका वर्णन हो वह 'आयुर्वेद' कहलाता है"-

हिताहितं सुखं दुःखमायुस्तस्य हिताहितम्।
मानं च तच्च यत्रोक्तमायुर्वेदः स उच्यते।।

जितने समयपर्यन्त शरीर एवं आत्माका संयोग रहता है, उतने समयका नाम 'आयु' है। इसी समय में प्राणी धर्मादि की सिद्धि कर सकता है।

मानव आयुर्वेदशास्त्र द्वारा आयु के विषयमें ज्ञान प्राप्त करता है, अतः इसका नाम 'आयुर्वेद' है- 'आयुरस्मिन् विद्यते, अनेन वाऽऽयुर्विन्दन्ति इत्यायुर्वेदः'।

शरीर एवं जीवका योग 'जीवन' कहलाता है, उससे युक्त कालका नाम 'आयु' है। आयुर्वेद द्वारा व्यक्ति आयु के विषय में हित-अहित द्रव्य तथा गुण एवं कर्मको जानकर और उनका सेवन तथा परित्याग करके आरोग्ययुक्त - स्वास्थ्यलाभपूर्वक आयुको प्राप्त करता है और दूसरों की आयु का भी ज्ञान प्राप्त करता है।

आचार्य चरक ने आयुर्वेद को अनादि और शाश्वत (नित्य) कहा है, परन्तु यह अनादि एवं शाश्वत क्यों है ? इसका क्या कारण है ? इस सम्बन्ध में आचार्य ने कहा है 'सोऽयमायुर्वेदः शाश्वतो निर्दिश्यते, अनादित्वात्, स्वभावर्ससिद्धलक्षणत्वात् भावस्वभावनित्यत्वाच्च'। इसे इस प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है-

अनादित्वात् - जिसकी उत्पत्ति न हो, उसे अनादि कहते हैं। आयुर्वेद की न कभी उत्पत्ति हुई और न होती है, अतः यह अनादि है। भारतीय चिकित्सा एवं चिकित्सेतर साहित्य में आयुर्वेद के ज्ञान अथवा उपदेश का उल्लेख मिलता है ज्ञान तथा उपदेश को छोड़कर कहीं उत्पत्ति का प्रसंग नहीं मिलता है।

स्वभावसंसिद्धलक्षणत्वात्- द्रव्यों का यह स्वभाव-सिद्ध लक्षण है कि जो द्रव्य जिस गुण वाले होते हैं, उनसे उन्हीं शारीरिक गुणों की वृद्धि और उनसे भिन्न गुणों का ह्रास होता है। इस प्रकार द्रव्यों का स्वभाव-सिद्ध लक्षण आयुर्वेद की नित्यता का द्योतक है।

भावस्वभावनित्यत्वात्- भाव पदार्थ का जो अपना स्वभाव होता है, वह नित्य है। जैसे अग्नि में उष्णता एवं जल में द्रवता आदि। गुरुद्रव्यों के सेवन से गुरुत्व गुण की वृद्धि एवं लघुत्व का ह्रास होता है। इसका ज्ञान आयुर्वेद से प्राप्त होता है, अतः आयुर्वेद नित्य है।

आयुर्वेद की नित्यता के उक्त साधक कारणों के अतिरिक्त मुख्य बात यह है कि आयुर्वेद अथर्ववेद का उपवेद है। वेद नित्य हैं, अतः उसका अंग आयुर्वेद भी नित्य है ।

आयुर्वेद मात्र चिकित्साशास्त्र नहीं है, अपितु यह एक दर्शन है, जो स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य का संरक्षण और रुग्ण व्यक्ति के रोग की मुक्ति तो करता ही है, साथ ही सांसारिक सर्वोच्च सुख एवं पारमार्थिक सर्वोच्च आनन्द की उपलब्धि के लिए निभ्रान्त मार्गदर्शन भी करता है।

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi